Vol 3 Issue 2 Nov 2013 ISSN No : 2249-894X

Monthly Multidisciplinary Research Journal

Review Of Research Journal

Chief Editors

Ashok Yakkaldevi
A R Burla College, India

Flávio de São Pedro Filho
Federal University of Rondonia, Brazil

Ecaterina Patrascu
Spiru Haret University, Bucharest

Kamani Perera
Regional Centre For Strategic Studies, Sri Lanka

Welcome to Review Of Research

RNI MAHMUL/2011/38595 **ISSN No.2249-894X**

Review Of Research Journal is a multidisciplinary research journal, published monthly in English, Hindi & Marathi Language. All research papers submitted to the journal will be double - blind peer reviewed referred by members of the editorial Board readers will include investigator in universities, research institutes government and industry with research interest in the general subjects.

Advisory Board

Flávio de São Pedro Filho
Federal University of Rondonia, Brazil

Kamani Perera
Regional Centre For Strategic Studies, Sri Lanka

Ecaterina Patrascu
Spiru Haret University, Bucharest

Fabricio Moraes de AlmeidaFederal
University of Rondonia, Brazil

Catalina Neculai
University of Coventry, UK

Anna Maria Constantinovici
AL. I. Cuza University, Romania

Romona Mihaila
Spiru Haret University, Romania

Horia Patrascu
Spiru Haret University, Bucharest, Romania

Delia Serbescu
Spiru Haret University, Bucharest, Romania

Xiaohua Yang
University of San Francisco, San Francisco

Karina Xavier
Massachusetts Institute of Technology (MIT), USA

May Hongmei Gao
Kennesaw State University, USA

Marc Fetscherin
Rollins College, USA

Liu Chen
Beijing Foreign Studies University, China

Mabel Miao
Center for China and Globalization, China

Ruth Wolf
University Walla, Israel

Jie Hao
University of Sydney, Australia

Pei-Shan Kao Andrea
University of Essex, United Kingdom

Loredana Bosca
Spiru Haret University, Romania

Ilie Pintea
Spiru Haret University, Romania

Mahdi Moharrampour
Islamic Azad University buinzahra Branch, Qazvin, Iran

Titus Pop
PhD, Partium Christian University, Oradea,
Romania

J. K. VIJAYAKUMAR
King Abdullah University of Science & Technology,Saudi Arabia.

George - Calin SERITAN
Postdoctoral Researcher
Faculty of Philosophy and Socio-Political Sciences
Al. I. Cuza University, Iasi

REZA KAFIPOUR
Shiraz University of Medical Sciences
Shiraz, Iran

Rajendra Shendge
Director, B.C.U.D. Solapur University, Solapur

Nimita Khanna
Director, Isara Institute of Management, New Delhi

Salve R. N.
Department of Sociology, Shivaji University, Kolhapur

P. Malyadri
Government Degree College, Tandur, A.P.

S. D. Sindkhedkar
PSGVP Mandal's Arts, Science and Commerce College, Shahada [M.S.]

Anurag Misra
DBS College, Kanpur

C. D. Balaji
Panimalar Engineering College, Chennai

Bhavana vivek patole
PhD, Elphinstone college mumbai-32

Awadhesh Kumar Shirotriya
Secretary, Play India Play (Trust),Meerut (U.P.)

Govind P. Shinde
Bharati Vidyapeeth School of Distance Education Center, Navi Mumbai

Sonal Singh
Vikram University, Ujjain

Jayashree Patil-Dake
MBA Department of Badruka College Commerce and Arts Post Graduate Centre (BCCAPGC),Kachiguda, Hyderabad

Maj. Dr. S. Bakhtiar Choudhary
Director,Hyderabad AP India.

AR. SARAVANAKUMARALAGAPPA
UNIVERSITY, KARAIKUDI,TN

V.MAHALAKSHMI
Dean, Panimalar Engineering College

S.KANNAN
Ph.D , Annamalai University

Kanwar Dinesh Singh
Dept.English, Government Postgraduate College , solan

More.....

Address:-Ashok Yakkaldevi 258/34, Raviwar Peth, Solapur - 413 005 Maharashtra, India
Cell : 9595 359 435, Ph No: 02172372010 Email: ayisrj@yahoo.in Website: www.isrj.net

Review Of Research
Vol. 3, Issue. 2, Nov. 2013
ISSN:-2249-894X
Available online at www.ror.isrj.net

ORIGINAL ARTICLE

कवि दिनकर के 'कुरूक्षेत्र' में मार्क्सवाद का चित्रण

टी. टी. लमाणी

शोधार्थी, हिन्दी विभाग, कर्नाटक विश्वविद्यालय धारवाड

सारांश :

मार्क्सवाद विश्व के श्रमिकों की एकता का सुत्र देनेवाले 'कार्ल मार्क्स' तथा 'एंगेल्स'ने समाजवाद का जो प्रमुख आन्दोलन खडा किया, उसका नाम 'मार्क्सवाद' या 'साम्यवाद' है । इस सम्बन्ध में डॉ. रामपूजन तिवारी का विचार है कि – " मार्क्सवाद वास्तव में इतिहास का दर्शन प्रस्तुत करता है और उसी को ध्यान में रखकर राजनैतिक क्रिया –कलाप का निर्धारण करता है । अतः मार्क्स को एक प्रकार से आर्थिक नियतिबाद कहा जा सकता है ।"[1] पूँजीवद को जितना गहन धक्का मार्क्सवाद से लगा, उतना अभी तक और किसी विचारधारा ने नहीं लगाया था । मजदूरों को उसमें अपने साधन का मार्ग दिखाई दिया और वे अपनी पूर्ण शक्ति से उसकी ओर आकृष्ट हुए । इस विचारा का इतना वर्चस्व एवं प्रभाव फैला कि गैर साम्यवादी भी उसके प्रभाव से वंचित नहीं रह सके इस प्रकार देखा जाये तो मार्क्स के बाद इनके विवारों का व्यवहारिक रुप प्रदान करने में ' एंगेल्स, लेनिन तथा स्टालिन' की भी महत्वपूर्ण भूमिका रही है ।

प्रस्तावना :

'मार्क्सवाद' के सम्बन्ध में डॉ. नगेन्द्र का विचार है कि– " दिनकर अपने देश आर युग–सत्य के प्रति जागरुक थे । कवि देश और काल की अनुभूति तथा चिन्तन, दोनों स्तरों पर ग्रहाण करने में समर्थ हुआ है । कवि ने राष्ट्र को उसकी तत्कालिन विषमताओं, घटनाओं, समताओं और यातनाओं आदि के रुप में नहीं, वरन् संश्लिष्ट सांस्कृतिक परम्परा के रुप में पहचाना है और उसके प्राचीन मूल्यों का नये जीवन सन्दर्भों के परिप्रेक्ष्य में आकलन कर एक ओर जीवन्ततना प्रदान की है । दूसरी ओर वर्तमान की आकांक्षाओं और समस्याओं को महत्व देते हुए उन्होंने अपने प्राचीन जीवन्त मूल्यों से तोडना चाहा है।"[2] यही कारण से ही 'दिनकर' के 'कुरुक्षेत्र' में मार्क्सवाद का चित्रण सार्वभौम रुप में दृष्टिगत होता है । 'कुरुक्षेत्र' की शष्टम सर्ग की टिप्पणियों में कवि ने यह स्वयं स्वीकार किया है कि " चूँकि मार्क्स ने धर्म को अफीम कहा है और लगभग सभी साम्यवादी नास्तिक है । इसीलिए यह मान लेना कि समाज में जहॉ भी समता लायी जाएगी, वहॉ नास्तिकता भी अवश्य रहेगी ।"[3]

'मार्क्सवाद' का लक्ष्य सामाजिक एवं आर्थिक विषमता का अन्त कर एक ऐसे समाज का निर्माण करना है, जिसमें सुख–दुख का समान वितरण हो । इस के अनुसार मजदूर वर्ग अपना अधिनायकत्व प्राप्त करता है, तब समाज में वर्ग नहीं रहते । 'दिनकर' कि साम्योपासक भावना 'कुरुक्षेत्र' में आकर दर्शन के धरातल पर पहुँच गई है । कवि ने दृढ आस्था के साथ कहा है कि –

"शान्ति नहीं तबतक, जबतक
सुख भाग न नर का सम हो,
नहीं किसी को बहुत अधिक हो,
नहीं किसी को कम हो ।"[4]

द्वन्द्वात्मक भौतिकवाद जीवन की क्षणिकता और परिवर्तनशीलता को स्वीकार करके भी भोग का निशध नहीं करता । भोग या प्रवृत्ति का सर्वाधिक विवेचन 'दिनकर' ने 'कुरुक्षेत्र' के अंतिम सर्ग में किया है । कवि के अनुसार आज के मानव को समाज में रहकर सभी के विकास का प्रयत्न करना चाहिए तभी तो पूर्ण आस्था के साथ कवि ने कहा है –

" धर्मराज सन्यास खोजना
कायरता है मन की,
हे सच्चा मनुजत्व ग्रन्थियॉ
सुलझाना जीवन की ।"[5]

स्पष्टरुप से यह परिलक्षित होता है कि इस प्रवृत्ति मार्ग में व्यक्तिवादी भोग के लिए कोई अवकाश नहीं है । इसीलिए उसे विषमय कहा गया है, तभी तो 'दिनकर' का कहना है कि –

" इस वैयक्तिक भोगवाद से
फूटी विष की धारा,

Title: *कवि दिनकर के 'कुरूक्षेत्र' में मार्क्सवाद का चित्रण* **Source: Review of Research [2249-894X]** *टी. टी. लमाणी* **yr:2013 vol:3 iss:2**

तडप रहा जिसमें पडकर
मानव–समाज यह सारा ।" [6]

राष्ट्र कवि 'दिनकर' के अनुसार यदि विज्ञान का सम्यक् विकास किया जाये तो आकाश भी धरती पर अवतरित होने की समुत्सुक हो जाये । इसका स्पष्ट रुप से उल्लेख कवि ने 'कुरुक्षेत्र' में प्रस्तुत करता है कि –

" सम्यक् विधि से इसे प्राप्त कर
नर सब कुछ पाता है,
मृत्ति–जयी के पास स्वयं ही
अम्बर भी आता है ।" [7]

कवि ने उस वैज्ञानिक–विकास को श्रेयस्कर नहीं मानते हैं, जिसमें केवल बुध्दि की क्रियाशीलता है और भावनाओं की गति कुण्डित हो गई है । वैज्ञानिक आविष्कारों को पूँजीवादी समाज ने शासन का साधन बना लिया है । इस समाज को विज्ञान ने ऐसे संहारक साधन भी प्रदान किये है, जो समस्त विश्व को श्मशान में परिवर्तित करने को तत्पर है । 'दिनकर' जी ने नवीन आविश्कारों से सम्पत्र तथा स्वार्थबध्द औद्योगिक समाज का विरोध किया है । कवि ने इसका यथार्थ चित्रण 'कुरुक्षेत्र' में इस तरह वेक्त करते हैं कि –

"सावधान, मनुष्य ! यदी विज्ञान तलवार,
ते इसे दे फेंके, तजकर मोह स्मृति के पार !
ळो चुका है सिध्द, है तू शिशु अभी नादानय
फूल–कॉटों की तुझे कुछ भी नहीं पहचान ।" [8]

'दिनकर' जी के अनुसार वर्गहीन समाज की स्थापना का प्रयास ध नही तामसिक प्रभुता की प्रतिक्रिया का परिणाम है । 'कुरुक्षेत्र' के समाप्त सर्ग में कवि राजा–प्रजा में भेद नहीं मानता । यह भेद–भाव तो मनुष्य द्वारा निर्मित है, कवि का कहना है कि –

" कौन यहॉ राजा किसका है ?
किसकी, कौन प्रजा है
नर ने कोकर भ्रमित स्वयं ही
यह बन्धन सिरजा है ।" [9]

'दिनकर' जी ने वसुधा की सारी सम्पत्ति पर जन–जन के अधिकार का वरेण्य माना है । कवि समस्त धरती पर निवास करनेवाली जनता को समान अधिकार दिलाना चाहता है । यही कारण है कि कवि ने 'कुरुक्षेत्र' में समान अधिकार की बात की है –

"जो कुछ न्यस्त प्रकृति में है,
वह मनुज मात्र का धन है,
धर्मराज, उसके कण–कण का
अधिकारि जन–जन है ।" [10]

कवि ने 'कुरुक्षेत्र' में सर्वप्रथम साम्यवाद का विस्तृत चित्रण 'भिष्म' के माध्यम से किया है । मार्क्सवाद पूँजीवाद का कट्टर विरोधि है । वह स्वयं के साथ दूसरे को भी जीवित देखना चाहता है । जन–सामान्य ही उसकी सम्पूर्ण आशाओं का प्राण केन्द्र होता है । जनता से अलग मार्क्सवाद को कोई अपना निजी अस्तित्व नहीं होता है । इस बात को 'दिनकर' जी ने 'कुरुक्षेत्र' के तृतीय सर्ग में बडा ही सटीक एवं यथार्थ रुप से प्रस्तुत करते हुए कहा है –

"अचाल रहे साम्राज्य शान्ति का
जियों और जीने दो ।" [11]

ऐसी शान्ति अधिक दिनों तक विराजमान रहती है । कवि ने यहॉ तक कहा है कि समानता के द्वारा जो शान्ति स्थापित होती है, वह सिर्फ तन पर ही राज्य नहीं करतीं, वरन् मानव के ह्रदय पर भी अमिट आधिपत्य जमा लेती है । इस प्रकार की शान्ति चिरस्थायी होती है । न्याय शान्ति का प्रथम पहलू है । जब तक अन्याय पर न्याय, असत्य की विजय नहीं हो जाती, तबतक कितना भी शान्ति का विशाल महल क्यों न हो । वह सदृढ एवं स्थायी नहीं हो सकता ?कवि का कहना है कि –

"न्याय शान्ति का प्रथम न्यास है,
जबतक न्याय न आता,
जैसा भी हो, महल शान्ति का
सुदृढ नहीं रह पाता ।" [12]

मध्यवर्ग को मॉगने से यदि अधिकार प्राप्त नहीं हो सके तो ऐसी परिस्थिति में क्या करना चाहिए?इसी बात को कवि ने ' युधिश्टर' से प्रश्न करते हुए पूछा है –

" स्वत्व मॉगने न मिले,
संघात पाप हो जाये

बेलो धर्मराज, शोषित वे,
जिये या कि मिट जाये ।"[13]

अर्थात् कवि युधिष्ठर से कहना यह चाहता है कि अधिकार यदि मॉंगने से नहीं मिलता हो, तो युध्द लडकर स्वत्व प्राप्त करना ही श्रयस्कर होगा, वरन युध्द से पलायन करना ही कायरता होगी । कवि ने तो यहाँ तक कहा है कि तेजस्वी पुरूष को यदि न्यायोचित अधिकार मॉंगने से नहीं मिले तो उसे लडकर छीन लेना ही धर्मसंगत होगा । मार्क्सवाद भी 'दिनकर' के इसी भाव मानना है । कवि का कहना है कि –

" न्यायोचित अधिकार मॉंगने
से न मिले, ते लड के,
तेजस्वी छीनते समर को
जीत, या कि खुद मर के ।"[14]

कवि 'कुरुक्षेत्र' में भीष्म के माध्यम से बुध्दि से वस्तुस्थिति की तीखी पहचान और हृदय में सार्वभौम सुख साम्राज्य की स्थापना की कामना सुन्दर समन्वय किया है । कवि का यह भाव 'कुरुक्षेत्र' की निम्नलिखित पंक्तियों में वेक्त किया है –

"कर पाता यदि मुक्त हृदय को
मस्तक के शासन से,
उत्तर पकडता बॉंह दलित की
मंत्री के आसन से ।"[15]

जबतक मनुष्य के भीतर लोभ, छल और कपट पैदा नहीं हुए थे, तबतक न तो सरकार थी, न कोई राजा था । आगे भी जब मनुष्य लोभ, छल और कपट से मुक्त हो जाएगा । राज्यसत्ता विलुप्त हो जाएगी और मनुष्य को सरकार की आवश्यकता नहीं रहेगी । गॉंधी तथा मार्क्स दोनों ही महान विभूतियों ने इस शासनमुक्त समाज की कल्पना बडे ढंग से की थी, जिसकी छाया 'कुरुक्षेत्र' पर स्पष्ट रुप से परिलक्षित होती है –

"तो न मानता कभी मनुज
निज सुख गौरव खोने में,
किसी राजसत्ता के सम्मुख
विनत दास होने में ।"[16]

कवि कहते है कि जबतक मनुष्य को उचित न्याय एवं अधिकार नहीं मिलता है, तब तक इस धरती पर शान्ति की स्थापना नहीं हो सकती । मानव–मानव में संघर्ष ही रहेग । यही कारण है कि कवि मनुष्य के अधिकार प्राप्ति की वकालत श्कुरुक्षेत्रश में वेक्त करते है कि –

"न्यायोचित सुख सुलभ नहीं
जब तक मानव–मानव को
चैल कहॉं धरती पर, तब तक शान्ति कहॉं इस भव को ।"[17]

सच बात तो यह है कि 'कुरुक्षेत्र' का कवि अपने देश में ऐसे समाज की कुक्षि में जन्म जिया था, जिस समाज के लिए राजद्रोह धर्म बन गया था । कवि यह स्वीकार करता है कि जहॉं अन्याय होता है, वहॉं यदी मानव अन्यायी के विरूध्द विद्रोह करता है तो इसका दायित्व उनपर नहीं होता है । कवि प्रबुध्द दलितों को भी अपने अधिकार प्राप्ति के लिए मर–मिटना ही श्रेयस्कर समझा जाता है । शोषण के द्वारा जो शान्ति स्थापित होती है, वह घोर अशान्ति का प्रतीक है । इस शोषण द्वारा प्राप्त शान्ति को जो मनुष्य मौनभाव से सहता है, वही मानव का सबसे बडा द्वार है । इस बात को कवि ने 'कुरुक्षेत्र' में बडे ही मार्मिक ढंग से प्रस्तुत किया है –

"पातकी न होता है प्रबुध्द दलितों का खड्ग,
पतकी बताना उसे दर्शन की भ्रान्ति है,
शोषण की श्रृंखला के हेतु बनती जो शान्ति,
युध्द है, यथाथ में वे भीषण अशान्ति है,
सहना उसे हो मौन द्वार मनुजत्व की है ।"[18]

अतः 'कुरुक्षेत्र' के कवि का मुख्य प्रतिपादन यह है कि जब तक संसार में सद्‌भावना, शान्ति, समता तथा न्याय की स्थापना नहीं होगी, तबतक युध्द अनिवार्य है । मनुष्य–मनुष्य में समानता हो, तभी संघर्श कम होगा, अन्याय नहीं होगा । इससे सम्बन्धित विचार उक्त पंक्तियों मे प्रस्तुत है –

"जब तक मनुज–मनुज का यह
सुभ भाग नहीं सम होगा,
शक्ति न होगा कोलाहल
संघर्ष नहीं कम होगा ।"[19]

अंत में यह कहा जाता है कि 'कुरुक्षेत्र' माध्यम से दिनकर नेग जन–सामान्य को अपने अधिकार प्राप्ति के लिए युध्द की प्रेरणा दी है । साम्राज्यवाद तथा पूॅंजीवाद को जड से समाप्त करने का सन्देश दिया है । जो मार्क्सवादी विचारधारा का पक्षधर है । मार्क्सवाद भी यही चाहता है । यही कारण से ही 'कुरुक्षेत्र' पर मार्क्सवाद का प्रभाव हो गया है ।

आधार ग्रंथ :

1.डॉ. रामपूजन तिवारी : पाश्चात्य काव्यशास्त्र – पृ. सं, 251.
2.डॉ. नगेन्द्र : हिन्दी साहित्य का इतिहास – पृ. सं, 629.
3.दिनकर : कुरुक्षेत्र – पृ. सं, 116.
4.वही – पृ. सं., 23.
5.वही – पृ. सं., 89.
6.वही – पृ. सं., 78.
7.वही – पृ. सं., 105.
8.वही – पृ. सं., 71.
9.वही – पृ. सं., 82.
10.वही – पृ. सं., 81.
11.वही – पृ. सं., 20.
12.वही – पृ. सं., 23.
13.वही – पृ. सं., 23.
14.वही – पृ. सं., 24.
15.वही – पृ. सं., 51.
16.वही – पृ. सं., 85.
17.वही – पृ. सं., 77.
18.वही – पृ. सं., 28.
19.वही – पृ. सं., 77.

Publish Research Article
International Level Multidisciplinary Research Journal
For All Subjects

Dear Sir/Mam,

We invite unpublished research paper.Summary of Research Project,Theses,Books and Books Review of publication,you will be pleased to know that our journals are

Associated and Indexed,India

- International Scientific Journal Consortium Scientific
- OPEN J-GATE

Associated and Indexed,USA

- DOAJ
- EBSCO
- Crossref DOI
- Index Copernicus
- Publication Index
- Academic Journal Database
- Contemporary Research Index
- Academic Paper Databse
- Digital Journals Database
- Current Index to Scholarly Journals
- Elite Scientific Journal Archive
- Directory Of Academic Resources
- Scholar Journal Index
- Recent Science Index
- Scientific Resources Database

Review Of Research Journal
258/34 Raviwar Peth Solapur-413005,Maharashtra
Contact-9595359435
E-Mail-ayisrj@yahoo.in/ayisrj2011@gmail.com
Website : www.isrj.net